# इकाई 2 भाषायी विविधता

## इकाई की रूपरेखा

2.0 प्रस्तावना

2.1 उद्देष्य

2.2 क्षेत्रीय भिन्नताएँ

2.3 सामाजिक वर्ग के कारण विभिन्नताएँ

2.4 जाति बोलियाँ

2.5 नृजातीय पृष्ठभूमि के कारण परिवर्तनषीलता

2.6 मानक बोली

2.7 भिन्नताओं के लिए उत्तरदायी वैयक्तिक कारक

2.8 प्रयुक्ति के कारण भिन्नता

2.9 सारांष

2.10 बोध प्रष्नों के उत्तर

2.11 कुछ पठनीय सामग्री

## 2.0 प्रस्तावना

अंग्रेजी भाषा के अध्यापक होने के नाते हमारा महत्वपूर्ण प्रमुख कार्य विद्यार्थियों की उच्चरित (बोली जाने वाली) और लिखित अंग्रेज़ी को सुधारना है। दूसरे शब्दों में, हम

जिस मानक अंग्रेज़ी से अवगत हैं उसी के आधार पर हम विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया का मूल्यांकन करते हैं।

लेकिन घर में या स्टाफ रूम में जब आप अन्य अध्यापकों को बातचीत करते सुनते हैं तो आप गौर करेंगे कि वे न केवल अलग–अलग भाषाएँ बोलते हैं बल्कि वे जिस भाषा को आप बोलते हैं  उस भाषा को आपसे अलग तरीके से बोलते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि आपकी और आपके पड़ोसियों की मातृ–भाषा हिंदी है तो वे एक–दूसरे के साथ उसी भाषा में बातचीत कर सकते हैं और उसे आसानी से समझ सकते हैं। आप ध्यान दें कि इसके बावजूद आपकी भाषा बिल्कुल अपने पड़ोसियों जैसी होती। एक युवा पड़ोसी (मान लीजिए, किषोर) संभवतः अपनी भाषा में आपसे ज्यादा बोलचाल की शब्दावली का प्रयोग करता होगा। एक अन्य पड़ोसी जो "षुद्धतावादी" है वह हिंदी में संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग अधिक करता होगा। वक्ता की अपनी–अपनी ये विलक्षण विषेषताएँ होती हैं और यह वक्ता की व्यक्ति भाषा (idiolect) कहलाती है। वस्तुतः हम अक्सर व्यक्तियों को उनकी अलग भाषा और भाषा रूपों (अर्थात व्यक्ति भाषा) से पहचान लेते हैं और यही स्व–पहचान की मूलभूत विषेषता है। तथापि, इन व्यक्तिगत भिन्नताओं के अलावा, एक ही भाषा बोलने वाले व्यक्तियों के समूह की भाषा में उसी भाषा को बोलने वाले अन्य समूह के व्यक्तियों में **नियमित** भिन्नताएँ दृष्टिगत हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, बनारस में रहने वाले लोग जो हिंदी बोलते हैं उस हिंदी में और दिल्ली तथा आगरा में बोली जाने वाली हिंदी में व्यवस्थापरक रूप से भिन्नता होती है।

इसलिए कहा जाता है कि व्यक्तियों के ये समूह उसी भाषा की भिन्न–भिन्न **बोलियाँ** बोलते हैं।

व्यवस्थापरक या बोली (भाषिक) संबंधी ये अंतर सामाजिक कारकों, क्षेत्रीय विभेदों, जाति वर्ग और नृजातीय समूह इत्यादि के कारण हो सकते हैं। भाषायी अंतर (भिन्नताएँ) व्यक्तिगत सामाजिक कारकों के कारण भी हो सकते हैं–जैसे किसी विषेष आयु और लिंग के लोग (स्त्री/पुरुष)। परिस्थिति भी एक ऐसा कारक है जिससे प्रयुक्त की जा रही भाषा में भिन्नताएँ आ सकती हैं।

## 2.1 उद्देष्य

इस खंड की इकाई 1 में हमने भाषा क्या है, इसके संभावित उद्‌भव और प्रकार्य, और मानव भाषा अन्य प्रकार की संप्रेषण पद्धतियों–विषेष रूप से जीव–जंतुओं की संप्रेषण पद्धतियों से, किस प्रकार भिन्न हैं, इन्हीं को बताने का प्रयास किया है। हमने इस तथ्य पर बल दिया है कि भाषा मानव उपजातियों का विलक्षण गुण है। तथापि, भाषा का प्रयोग प्रमुख रूप से दूसरे लोगों के साथ संप्रेषण करने के लिए किया जाता है अर्थात् भाषा का प्रयोग समाज में होता है।

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत आप निम्नलिखित करने में सक्षम होंगे:

- यह स्पष्ट कर सकें कि भाषा स्थैतिक अस्तित्व अर्थात स्थिर नहीं बल्कि परिवर्तनषील है।

- भौगोलिक स्थिति, सामाजिक–आर्थिक स्तर, जाति, नृजातीय समूह जैसे **सामाजिक कारकों** तथा उन कारकों का पता लगा सकेंगे और चर्चा कर सकेंगे जो भाषा में भिन्नताओं के लिए उत्तरदायी होते हैं।

- लिंग (जैंडर) और उम्र जैसे **व्यक्तिगत कारकों** का पता लगा सकेंगे और उनकी विवेचना कर सकेंगे जो भाषा विविधता को प्रभावित करते हैं।

- बातचीत का विषय, दो प्रतिभागियों के बीच संबंध और संप्रेषण के तरीकें जैसी स्थितियों के आधार पर भाषा में किस प्रकार की भिन्नताएँ होती हैं इसकी चर्चा कर सकेंगे।

## 2.2 क्षेत्रीय भिन्नताएँ

यदि आप किसी एक विषिष्ट दिषा में एक स्थान से दूसरे स्थार पर जैसे कि एक गाँव से दूसरे गाँव में जाएँगे तो अक्सर आपको भाषायी भिन्नताएँ दिखाई देंगी। क्षेत्रों के एक–दूसरे के अत्यंत निकट होने पर ये अंतर अपेक्षाकृत कम से कम होंगे। तथापि, जहाँ से आपने प्रारंभ किया था उस बिंदु से आप जितना आगे जाते जाएँगे, अंतर उतने ही ज्यादा होते जाएँगे। ये अंतर (भिन्नताएँ) **बोलियाँ** कहलाती हैं। एक बोली सामान्यतः किसी एक विषिष्ट भौगोलिक क्षेत्र से संबद्ध होती है। बोलियों में उच्चारणगत भिन्नता के बावजूद भाषा विज्ञान की दृष्टि से इनमें बहुत अधिक अंतर होता है। उदाहरण के लिए, भारत के विभिन्न हिस्सों में बोली जाने वाली हिंदी को ही लें। इसमें हमें ध्वनियों, शब्द–भंडार और व्याकरण के स्तर पर भिन्नताएँ देखने को मिल सकती हैं।

आइए, हम खड़ी बोली (दिल्ली की हिंदी) और भोजपुरी (पूर्वी उत्तर प्रदेष की हिंदी) के कुछ उदाहरण देखें:

**ध्वनियों के स्तर पर भिन्नताएँ**

| **अंग्रेज़ी** | **खड़ी बोली** | **भोजपुरी** |
|---|---|---|
| ब्यॉय (Boy) | लड़का | लरिका/लैयका |
| फिष (Fish) | मछली | माछरी |
| फायर (Fire) | आग | आगी |
| टू टेक (To take) | लेना | लेब |

**शब्दों के स्तर पर भिन्नताएँ**

| **अंग्रेज़ी** | **खड़ी बोली** | **भोजपुरी** |
|---|---|---|
| ट्री (Tree) | पेड़ | गाच |
| मीट (Meat) | माँस | सीगोटी |
| ग्राम (Gram) | चना | भूर |
| फुट (Foot) | पैर | गॉड |
| लाइट (Light) | प्रकाष | अंजोर |

यदि हम आंध्र प्रदेष की ओर जाएँ तो तेलगांना में बोली जाने वाली बोली में हिंदी–उर्दू के ऐसे काफी शब्दों का प्रयोग होता है जिनका प्रयोग अन्य क्षेत्रों में नहीं मिलता।

जब हम अंग्रेज़ी के देषीय रूप पर विचार करते हैं तो हम पाएँगे कि ब्रिटिष, अमरीकी और ऑस्ट्रेलियाई अंग्रेज़ी में काफी भिन्नताएँ हैं। यह भिन्नताएँ न केवल स्वनिमिक और शाब्दिक के स्तरों पर हैं बल्कि वाक्य विन्यास के स्तर पर भी ये भिन्नताएँ पाई जाती हैं जिनमें बदलाव करना संभव नहीं है। इन भिन्नताओं के उदाहरण नीचे दिए गए हैं:

| **क्रिया** | **ब्रिटिष अंग्रेज़ी** | **अमरीकी अंग्रेज़ी** |
|---|---|---|
| वर्तमान (Present) | भूत और भूतकालिक कृदंत | भूत और भूतकालिक कृदंत |
| dream | dreamt | dreamed |
| leap | leapt | leaped |
| dive | dived | dove, dived |
| smell | smelt | smelled |

निम्नलिखित पर भी विचार कीजिए :

| **अमरीकी अंग्रेज़ी** | **ब्रिटिष अंग्रेज़ी** |
|---|---|
| कुकी | बिस्किट |
| सोफोमोर | सेकिंड इयर स्टूडेंट (द्वितीय वर्ष का विद्यार्थी) |
| फॉसिट | टैप |
| डेज़र्ट | पुडिंग |
| काउच | सोफा |
| लिविंग रूम | सिटिंग रूप |
| कैन | टिन |
| क्यू | लाइन |
| गैस | पेट्रोल |
| पिचर (घड़ा) | जग |

---

**बोध प्रश्न 1**

**टिप्पणीः** (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) आप किसी विषिष्ट क्षेत्र के हैं, और आप या तो उस क्षेत्र की बोली बोलते हैं या आपको उस बोली की थोड़ी–बहुत जानकारी है। उसी भाषा के उसी क्षेत्र के ऐसे व्यक्ति से बातचीत करें जो यही भाषा बोलता हो जो आप बोलते हैं। इस आधार पर ऐसे पाँच अंतर लिखिए जो आपकी बोली से भिन्न हैं।

..........................................................................................................................

..........................................................................................................................

..........................................................................................................................

..........................................................................................................................

## 2.3 सामाजिक वर्ग के कारण विभिन्नताएँ

भाषा वक्ताओं की सामाजिक–आर्थिक स्तर के कारण भी भिन्न हो सकती है। हालाँकि यह स्थिति इस संदर्भ में काफी अनिष्चित प्रतीत होती है। सामाजिक वर्ग स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं है बल्कि समाज आर्थिक और सामाजिक स्तर के लोगों का समूह है अतः वे समान प्रकार के विषेषाधिकारों के अधिकारी होते हैं। सामाजिक और आर्थिक गतिषीलता (अर्थात् एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना) के कारण भी भाषा में भिन्नताएँ/परिवर्तन हो सकते हैं इसलिए भाषायी स्थिति को जटिल माना जाता है।

कई शोध अध्ययनों से पता चलता है कि जनसमूह की भाषा में स्वनिमिक या व्याकरणिक भिन्नताओं से भी पता चल जाता है कि वे किस सामाजिक वर्ग के हैं। जब इन

भिन्नताओं में व्यवस्थित ढंग से परिवर्तन होता है तब इनसे सामाजिक वर्ग की बोलियाँ उत्पन्न होती हैं।

हालाँकि यदि हम भाषा और सामाजिक वर्ग के बीच संबंध की एक सही व स्पष्ट तस्वीर (जानकारी) चाहते हैं तो हमें भाषायी और सामाजिक दोनों तथ्यों का मूल्यांकन करना होगा ताकि हम दोनों में परस्पर संबंध स्थापित कर सकें। एक अमरीकी भाषाविद विलियम लेबोव इस कार्य को वैज्ञानिक रूप से करने के लिए साधन प्राप्त करने में सफल रहे और 1966 में उनकी श्रेष्ठ कृति *दि सोषल स्ट्रेटिफिकेषन ऑफ इंगलिष इन न्यूयार्क सिटी*" प्रकाषित हुई जो न्यूयार्कवासियों की भाषा के बड़े पैमाने पर किए गए सर्वेक्षण के परिणाम पर आधारित है।

लेबोव ने इस परिकल्पना के साथ सर्वेक्षण प्रारंभ किया कि न्यूयार्क सिटी के वक्ताओं के उच्चारण में /r/ में भिन्नता होती है। यह भिन्नता उनके सामाजिक स्तर के अनुसार है। न्यूयार्कवासी जितने अधिक उच्च सामाजिक स्तर के होते हैं उनके उच्चारण में उतना अधिक /r/ आता है। इस तथ्य को सिद्ध करने के लिए न्यूयार्क सिटी के ऐसे तीन डिपार्टमेंट स्टोर के सेल्समैन के साक्षात्कार (इंटरव्यू) लिए जिन स्टोर में दामों और सामाजिक प्रतिष्ठा में अंतर था। उन्होंने यह माना कि सेल्स स्टॉफ अपने उपभोक्ताओं की भाषा का अनुकरण (नकल) करेगा और इसलिए यह पूर्वानुमान लगाया कि अलग–अलग डिपार्टमेंट स्टोरों में उपभोक्ताओं के सामाजिक स्तरीकरण सेल्समेन के स्तरीकरण में भी समान रूप से दृष्टिगत होगे (फैसफोल्ड, 1988)। इन्हीं पूर्वानुमानों से वह इस परिकल्पना तक पहुँचे कि उच्चतम श्रेणी में आने वाले स्टोर के सेल्समेन में /r/ पर सबसे अधिक बल

होगा; मध्य श्रेणी वाले स्टोर में /r/ पर बल मध्यम होगा, और निम्नतम श्रेणी वाले स्टोर में /r/ पर बल निम्नतम होगा।

लेबोव ने तीन स्टोरों को चुनाः साक्स (Saks) (उच्च प्रतिष्ठा वाले) मैकी (Macy) (मध्यम स्तरीय) और एस. क्लेइन (S. Klein) (निम्न प्रतिष्ठा वाले)। उसने सेल्समैन से ऐसा प्रष्न पूछा जिनका उत्तर "फोर्थ फ्लोर" होगा।

साक्षात्कार लेने वाला विषिष्ट विभाग की दिषाएँ पूछने के लिए उपभोक्ता की भूमिका में सूचनादाता के पास गया। जो विभाग चौथी मंजिल पर था उससे संबंधित बात पूछी "क्षमा कीजिए, महिलाओं के जूते कहाँ मिलते हैं?" उत्तर सामान्यतः "फोर्थ फ्लोर" था।

तब साक्षात्कार लेने वाला आगे झुका और कहा "क्षमा कीजिए? कहाँ पर"। इससे उसे अन्य उच्चारण मिला "फोरथ फ्लोर" जोकि अवधारण दबाव में सावधानीपूर्वक तरीके से बोला गया था।" (लेबोव, 1972 : 49)

शब्द "फोरथ फ्लोर" में /r/ दो बार आता है और न्यूयार्क सिटी के वक्ताओं में दोनों ही /r/ के उच्चारण में भिन्नता पाई गई है और इस तरह लेबोव ने उच्चारणों को दोहराने के लिए कह कर इस शब्द के असावधानीपूर्वक और सावधानीपूर्वक दोनों प्रकार के उच्चारणों का अध्ययन किया।

जैसा कि लेबोव ने पूर्वानुमान लगाया था निम्न श्रेणी वाले स्टोर (एस.क्लेइन) में /r/ ध्वनियों का प्रयोग में लाने वालों की संख्या काफी कम थी। यह 20 प्रतिषत से कम थी। मध्य स्तर के स्टोर (मैकी) में /r/ का प्रयोग लगभग 50 प्रतिषत किया गया और

सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त स्टोर (सॉक) में /r/ का प्रयोग 60 प्रतिषत से भी अधिक था। परिणाम दर्षाते हैं कि /r/ का उच्चारण न्यूयार्क सिटी में वक्ताओं के सामाजिक स्तर से संबंध को दर्षाता है।

प्रारंभिक सर्वेक्षण के बाद, प्रत्येक वर्ग के व्यक्तियों की भाषा की ज्यादा विस्तार से छानबीन की। उन्होंने अवलोकन किया कि सहज भाषा (असावधानीपूर्वक) की तुलना में सजग भाषा (सावधानीपूर्वक) बोलने में और शब्द सूचियों को पढ़ने में /r/ को बहुत अधिक स्थान दिया गया अर्थात /r/ का उच्चारण बहुत ज्यादा किया गया और ऐसा सभी सामाजिक वर्गों में भी पाया गया।

सभी सामाजिक वर्गों के संबंध में यह बात सही है। तथापि, एक अनपेक्षित निष्कर्ष प्राप्त हुआ। शब्द सूचियों को पढ़ते समय निम्न–मध्यम वर्ग के व्यक्तियों ने उच्च मध्यम वर्ग के व्यक्तियों की तुलना में /r/ का प्रयोग ज्यादा किया। सहज भाषा में यह स्थिति बिल्कुल विपरीत थी। इससे ज्ञात होता है कि निम्न मध्यम वर्ग के व्यक्ति सामाजिक वर्ग के सूचक के रूप में भाषा के बारे में ज्यादा सजग व सचेत हैं और अपने स्तर को सुधारने का प्रयास कर रहे हैं। तथापि, यह केवल तभी झलकता है जब वे उच्चारण के प्रति सजग होते हैं।

न्यूयार्क सिटी में /r/ के उच्चारण के संबंध में गौरतलब रोचक बात यह है कि न्यूयार्क सिटी के वक्ता वहाँ भी जहाँ/r/ का उच्चारण करते हैं जहाँ वास्तविक वर्तनी में /r/ होता भी नहीं। उदाहरण के लिए "सा" (saw) का उच्चारण "सार – Sor" करते हैं। आइडिया को आइडियार, क्यूबा का उच्चारण क्यूबर करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि काफी वक्ता

जो कुछ शब्दों और स्थानों में /r/ होता है वहाँ /r/ को छोड़ देते हैं और जहाँ वर्तनी या उच्चारण में /r/ नहीं होता वहाँ /r/ को डालते हैं। यह परिघटना **अतिषोधन दोष** कहलाती है। जहाँ ग़ैर–मानक अंग्रेज़ी भाषा के वक्ता उन स्थानों पर "प्रतिष्ठा–ग्राही" रूप का प्रयोग करते हैं जहाँ उसकी जरूरत भी नहीं होती।

---

**बोध प्रष्न 2**

**टिप्पणीः** (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) किन सामाजिक–आर्थिक वर्गों में अपनी भाषा में भिन्नताएँ/दिखाने की संभावना है? क्यों?

.....................................................................................................................................

.....................................................................................................................................

.....................................................................................................................................

.....................................................................................................................................

2) 'अतिषोधन दोष' क्या है।

.....................................................................................................................................

.....................................................................................................................................

.....................................................................................................................................

.....................................................................................................................................

## 2.4 जाति बोलियाँ

भारत के कई राज्यों में, विषेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में समाज भिन्न–भिन्न जातियो ंमें स्तरीकृत है। ये जाति बोलियाँ मूलतः स्थिर, विषिष्ट समूहों और एक–दूसरे से अलग हुए, वंषानुगत सदस्यता वाले और एक जाति से दूसरी जाति में जाने की कम संभावना वाले व्यक्तियों/समूहों द्वारा बोली जाती है। उदाहरण के लिए, तमिलनाडु में, स्वन, शब्द भंडार और बाह्मणों एवं ग़ैर–ब्राह्मणों के उच्चारण स्वरूपों की व्याकरण के बीच स्पष्ट भिन्नताएँ हैं।

| **शब्द** | **ब्राह्मण** | **ग़ैर–ब्राह्मण** |
|---|---|---|
| भेड़ (Sheep) | टूंगू (Tungu) | ओरांगू (orangu) |
| जल (water) | जल (jal) | तन्नी (tanni) |
| हेयर कट (haircut) | क्राफू (krafu) | कराप्पू (krappu) |
| चीनी (sugar) | जिन्नी (jinni) | सीनि (cini) |
| केला (Banana) | वारेप्पारो (varepparo) | वारेप्पोलो/वालेप्पोलो (vareppolo/valeppolo) |

तथापि, षिक्षा के निरंतर प्रसार और शहरीकरण ने इन भाषायी भिन्नताओं को कम कर दिया है।

तेलुगु के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं जो मूलतः जातिगत–भिन्नताओं के कारण हैं, लेकिन अब ग्रामीण बनाम शहरी वक्ताओं के मामलों के रूप में विद्यमान हैं।

**शब्दों के स्तर पर**

| **शब्द** | **शहरी (मूलतः ब्राह्मण) भाषा** | **ग्रामीण (मूलतः ग़ैर–ब्राह्मण) भाषा** |
|---|---|---|
| साड़ी | चीरा | कूकी |
| बीमारी | जब्बू | रूगम |

**ध्वनियों के स्तर पर**

| | | |
|---|---|---|
| वेंट | वेलेनू | ईलेनू |
| लक्ष्मी (देवी) | लक्ष्मी | लक्मी |

---

**बोध प्रश्न 3**

**टिप्पणीः** (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) क्या आपकी भाषा में जाति के कारण कोई भाषायी अंतर है? आपने जो अंतर देखे हैं उन्हें लिखिए।

.........................................................................................................................

.........................................................................................................................

.......................................................................................................................................

.......................................................................................................................................

## 2.5 नृजातीय पृष्ठभूमि के कारण परिवर्तनषीलता

समाज के अंदर विभिन्न नृजातीय पृष्ठभूमियों के कारण कई अंतर हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, हाल ही के आप्रवासियों और उनके बच्चों में भी, कुछ अभिनिर्धारक (पहचानने योग्य) विषेषताएँ होंगी। कुछ क्षेत्रों में जहाँ समूह की मूल भाषा के प्रति सुदृढ़ निष्ठा होती है या जहाँ विभेदीकरण या विखंडन का इतिहास है, वहाँ अधिकांष विषेषताएँ नई भाषा में आ जाती हैं। उदाहरण के लिए, अमरीकी काले लोगों (जिन्हें काले अंग्रेज भी कहा जाता है) की भाषा ने क्षेत्रीय और कभी–कभी सामाजिक व्यवधानों को लांघ कर नई अलग पहचान स्थापित की है।

ब्लैक इंगलिष की कुछ विषेषताएँ हैं तथाकथित परिवर्तनषील be (invariant be) : be रूप का प्रयोग समापिका क्रिया (finite verb) रूप में और दोहरे नकारात्मक वाक्यों का प्रयोग

**तथाकथित invariant be के उच्चारण**

i He usually be around.

ii Sometime she be fighting.

iii She be nice and happy

iv They sometime be incomplete

उदाहरण Trudgill, 1974 से लिए गए हैं।

**दोहरे नकारात्मक वाक्य के उच्चारण**

i He don't know nothing.

ii I ain't afroad of no ghosts.

---

## 2.6 मानक बोली

---

अभी तक हमने विभिन्न प्रकार की बोलियों – क्षेत्रीय बोलियाँ, समाज बोलियाँ, जाति और नृजातियों के कारण उत्पन्न बोलियों पर चर्चा की है। बोली भाषा से कैसे भिन्न होती है। तो हम कैसे भाषा और उसी भाषा के प्रकारों के बीच अंतर कर सकते हैं।

भाषा और बोली (या जनभाषा या स्थानीय बोली) के बीच भेद करने का कोई भाषायी मानदंड नहीं है। **संरचनात्मक समानताएँ या असमानताएँ** केवल अत्यंत असमान भाषाओं में अंतर बता सकती हैं। उदाहरण के लिए, चीनी और अंग्रेज़ी या कुर्दी और तुर्की स्पष्टतया अलग भाषाएँ हैं क्योंकि उनकी भाषायी संरचनाओं में बहुत भिन्नताएँ हैं। हिंदी, उर्दू और पंजाबी संरचनात्मक और शाब्दिक रूप से काफी समान हैं; कन्नड़ और मराठी संरचनात्मक रूप से लगभग समान हैं लेकिन शाब्दिक रूप से असमान हैं।

वस्तुतः, कोई भाषा किसी अन्य भाषा की बोली है या पृथक भाषा, इसका मुख्य मानदंड सापेक्षिक रूप से **उस भाषा/बोली के वक्ताओं की राजनीतिक शक्ति** है। तथाकथित भाषा **मानक बोली** भी कहलाती है।

”भाषाएँ” कौन–सी हैं और कौन–सी नहीं हैं, इससे संबंधित निर्णय राजनीतिक निर्णय होते हैं।

षक्ति संपन्न या शक्तिषाली लोगों के संप्रेषण के मौखिक तरीके को भाषा कहा जा सकता है और जिस समुदाय के लोगों के पास राजनीतिक ताकत नहीं है, उनकी भाषा को बोली कहा जा सकता है। इन दावों का यह अभिप्राय नहीं है कि हमें अलग भाषाओं के बारे में बात नहीं करनी चाहिए। ऊपर किए गए दावों का महत्व यह है कि जब लोग अलग भाषाओं के बारे में बात करें तो हमें सावधान रहना चाहिए। हमें यह पूछने की आवष्यकता है कि यह भाषा है और यह बोली है? यह दावा करने का राजनीतिक अधिकार किसे है?

मानक बोली सामान्यतः भाषा का वह प्रकार है जिसका प्रयोग मुद्रित सामग्री में किया जाता है और जो सामान्यतः विद्यालयों में और भाषा सीखने वाले विदेषियों को पढ़ाई जाती है। यह भाषा का वह प्रकार है जो कूटबद्ध होता है अर्थात व्याकरण की पुस्तकें और शब्दकोष इसी प्रकार के आधार पर लिखे जाते हैं। इसके अलावा, समाचार प्रसारणों में इसका प्रयोग किया जाता है और यह षिक्षित लोगों द्वारा बोली जाती है। कई लोग इस भाषा को ”वास्तविक भाषा” मानते हैं और उसे बोलियों से अलग करते हैं। तथापि, कई में से केवल यही एक भाषा–प्रकार नहीं है, इसका महत्व इस तथ्य में निहित है कि इसने एक प्रतिष्ठा हासिल कर ली है।

हडसन (1980) ने इस संबंध में बताया कि एक विषिष्ट मानव बोली निम्नलिखित प्रक्रियाओं से गुजरती हैः

## चयन

मानक भाषा में विकसित करने के लिए किसी विषिष्ट भाषा को चुना जाता है। यह चयन सामाजिक या राजनीतिक कारणों की वजह से हो सकता है। तथापि, कुछ क्षेत्रों में चुनी गई भाषा ऐसी होती है जिसका कोई भी देषीय वक्ता नहीं होता। उदाहरण के लिए, इज़रायल में क्लासिकल हिब्रू और इंडोनेषिया में बहासा इंडोनेषिया।

## कूटबद्धन या कोडीकरण (Codification)

कई एजेंसियाँ चुनी गई भाषा के शब्दकोष और इससे संबंधित व्याकरण पुस्तकें तैयार करते हैं ताकि सभी मान सकें क्या सही है? एक बार कोडीकरण हो जाने पर प्रत्येक नागरिक के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि वे अपनी बोलियों के सही रूपों को सीखें व जानें और उनके ग़ैर–मानक रूपों को न लिखें।

## प्रकार्य का विस्तारण (Elaboration of Function)

मानक भाषा केन्द्रीय सरकार के सभी प्रकार्यों से जुड़ी होती है अर्थात संसद, विधि न्यायालय, सभी प्रकार के अधिकारी तंत्र, शैक्षिक और वैज्ञानिक प्रलेख।

## स्वीकृति

इस भाषा–प्रकार को लोग राष्ट्र की राष्ट्र–भाषा के रूप में स्वीकार करते हैं। भाषा के राष्ट्र–भाषा स्वीकार हो जाने के बाद मानक भाषा देष की सुदृढ़ एकताकारी शक्ति के रूप में और अन्य देषों में अपनी स्वतंत्रता के प्रतीक के रूप में काम करती है।

लेकिन एक बोली के इतने प्रतिष्ठा प्राप्त करने के क्या सामाजिक कारण होते हैं? इनमें से एक कारण यह हो सकता है कि बोली देष के राजनीतिक, वाणिज्यिक और सांस्कृतिक केंद्र में बोली जाती है और उसी के कारण महत्ता प्राप्त करती है। फ्रांस में पेरिसवासी बोली का प्रभुत्व और इंग्लैंड में लंदन बोली का प्रभुत्व इसी के कारण है। अमेरिका में मानक अमरीकी अंग्रेज़ी षिक्षित गोरे मध्य वर्ग की विषिष्टता है और यह अमेरिका में गोरे मध्य वर्ग मूल्य पद्धति के प्रति सामान्य पक्षपात को दर्षाती है।

तथापि हमें एक बात बिल्कुल स्पष्ट होनी चाहिए कि एक मानक बोली के कई प्रकार्य हो सकते हैं। यह लोगों को एक दूसरे के साथ बाँधती है या बहु–बोली वाले वक्ताओं के लिए एक सामान्य लिखित रूप प्रदान कर सकती है। लेकिन भाषायी संदर्भों में दूसरी किसी बोली की तुलना में न तो वक्ताबोधक/भावबोधक होती है न ही तार्किक होती है, न ही ज्यादा सही या जटिल होती है। किसी एक बोली को किसी दूसरी बोली में श्रेष्ठ या ऊँचा मानने के कोई वैज्ञानिक या भाषायी कारण नहीं हैं। सभी भाषाएँ भाषा के प्रभावी रूपों में समान हैं, इनमें किसी भी विचार पर इच्छा को एक बोली में उसी तरह व्यक्त किया जा सकता है जैसे कि किसी दूसरी बोली में। **एक विषिष्ट बोली को मानक भाषा मानना एक सामाजिक–राजनीतिक निर्णय है न कि भाषायी निर्णय।** विष्व भर के देषों में मानक राष्ट्र भाषा अत्यधिक प्रतिष्ठित और शक्ति संपन्न उपसंस्कृति की बोली है।

---

**बोध प्रष्न 4**

**टिप्पणीः** (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) एक बोली मानक भाषा बनने के लिए सामान्यतः किस प्रक्रिया से गुजरती है। उसका वर्णन कीजिए।

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

2) मानक बोली क्या है? बोली प्रतिष्ठा कैसे हासिल करती है? क्या वैज्ञानिक दृष्टि से यह अन्य बोलियों से श्रेष्ठ होती है?

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

## 2.7 भिन्नताओं के लिए उत्तरदायी वैयक्तिक कारक

पिछले भागों में हमने पढ़ा कि एक ही भाषा बोलने वालों के बीच भी सामाजिक कारणों से भाषायी भिन्नताएँ होती हैं। इस भाग में वक्ताओं की ऐसी व्यक्तिगत विषेषताओं अर्थात लिंग और आयु पर चर्चा करेंगे जिनके कारण उनकी भाषा में अंतर हो सकता है।

## लिंग भिन्नताएँ

भाषायी अनुसंधान दर्षाते हैं कि कई समाजों के पुरुषों की भाषा महिलाओं की भाषा से अलग होती है। कुछ रूढ़िवादी समाजों में ऐसा स्त्री–पुरुष के बीच पृथक्करण के कारण हो सकता है। लेकिन जिन समाजों में पुरुष और महिलाएँ  एक दूसरे से मुक्त रूप से व बेझिझक संप्रेषण करते हैं उनमें ऐसा क्यों होता है? फिर ऐसे अंतर क्यों पैदा होते हैं? लेबोव (1986) और ट्रडगिल (1972, 1974) ने क्रमषः अमेरिका और इंग्लैंड के पष्चिमी समाजों का अध्यायन किया। उन्होंने कई उदाहरणों के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ प्रतिष्ठाग्राही मानक से जुड़े भाषायी रूपों को अधिक प्रयुक्त करती हैं। इसके लिए उन्होंने दो संभावित मुख्य कारण बताएँः

i) अतः महिलाओं के लिए अपने सामाजिक स्तर का संकेत देने के लिए आवष्यक हो जाता है कि वे कैसे दिखती है और कैसे व्यवहार (भाषायी रूप से) करती है न कि वे क्या करती हैं?

ii) अधिकांष समाजों में कुछ हद तक भाषा में कठोरता और रुखापन प्रषंसनीय पुरुषोचित गुण माने जाते हैं। दूसरी ओर समाज महिलाओं से अपेक्षा करता है कि वे ज्यादा सही, विवेकषील/षांत और विनम्र हों और समाज पुरुषों की अपेक्षा

ज्यादा "सही" और प्रतिष्ठित भाषायी रूपों का प्रयोग करने का उन पर दबाव डालता है। उदाहरण के लिए, पुरुष तो अपषब्दों  का प्रयोग कर सकते हैं लेकिन महिलाओं के लिए यह स्वीकार्य नहीं है।

तथापि, ऐसे कोई व्याकरणिक रूप, शब्दगत भेद या उच्चारण के प्रतिमान नहीं हैं जिनका प्रयोग केवल एक लिंग द्वारा ही किया जाता है। हाँ, इनके प्रयोग की आवृति में अंतर है। उदाहरण के लिए, पुरुषों की तुलना में महिलाएँ ज्यादा भावात्मक विषेषणों का प्रयोग करती हैं (जैसे **सुपर, लवली**)। विस्मयादि बोधक जैसे **गुडनेस मी ओ डियर! हाउ वंडरफुल!** (Goodness me, Oh Dear! How Wonderful!) और तीव्रक जैसे **सो** (so) और **सच** (such) (इट वाज़ **सच** ए वंडरफुल पार्टी)। महिलाओं की प्रष्न पूछने की प्रवृत्ति ज्यादा होती है और उनमें सुरीलापन ज्यादा होता है और लयात्मक बल ज्यादा विषिष्ट होता है। दूसरी ओर, पुरुष ज्यादा टोकते हैं, जो कहा गया है उस पर झगड़ा करते हैं, नए विषय सामने लाते हैं और तथ्यों या मतों की ज्यादा घोषणाएँ करते हैं (क्रिस्टल, 1987 से उद्धृत)।

मुखर्जी (1980) ने बंगालियों, पंजाबियों और सत्यनाथ (1982) ने कन्नड़ियों द्वारा हिंदी बोलने को आत्मसात करने पर कार्य करते हुए पाया कि दिल्ली में पुरुषों की तुलना में महिलाओं में हिंदी से संबंधित भाषायी विषेषताओं के आत्मसातीकरण का प्रतिषत अधिक था। ट्रडगिल (1979ए) की भाँति मुखर्जी (1980) ने भी सामाजिक असुरक्षा के तथ्य को इसके लिए उत्तरदायी ठहराया, सत्यनाथ ने कन्नड़ समुदाय के सामाजिक सांस्कृतिक

पहलुओं के संदर्भ में इसका उल्लेख किया जिसमें महिलाएँ, मेज़बान समाज के साथ अंतःक्रिया में अधिकांषतः बातचीत करती हैं।

शोधकर्त्ताओं ने बेहतर भाषायी निष्पादन के लिए कई अन्य रोचक कारण उद्धृत किए हैं। रॉबिनसन (1970) ने द्वि भाषी षिक्षा में लड़कियों के लड़कों से बेहतर निष्पादन का एक कारण संभवतः विद्यालयों में ज्यादा महिला षिक्षक होने को बताया। यह भी संभव है कि लड़के इस प्रकार के प्रभुत्व (प्रबलता) के प्रति नकारात्मक तरीके से अनुक्रिया करें और विद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली मानक अंग्रेज़ी के साथ–साथ काफी हद तक मूल्य पद्धति के अन्य पहलुओं को स्वीकार न करें। टेलर और अन्य (1971) ने अस्थायी रूप से यह अनुमान लगाया कि लड़कों से अपने विभेदक समाजीकरण के कारण लड़कियाँ द्वितीय भाषा में ज्यादा निपुण होती हैं। लड़कियों को इस तरह से सामाजिक बनाया जाता है कि उन्हें "अवधारक क्षमता" जुटाना आसान लगता है, "अवधारक क्षमता" अर्थात दूसरों की भावनाओं को पहचान पाने और उनके व्यवहार का मूल्यांकन कर पाने की योग्यता, जोकि L2 में धारा प्रवाह के लिए महत्वपूर्ण कारण है (लवडे, 1982)।

### आयु

कई सामाजिक–भाषायी अध्ययनों में यह देखा गया है कि पुरानी पीढ़ी और युवा पीढ़ी के बीच एक सुस्पष्ट अंतर है। इनमें आयु श्रेणीकरण इसका एक कारक हो सकता है। यह सर्वमान्य है कि भाषायी व्यवहार में कुछ विषेषताएँ वक्ता के जीवन के विभिन्न अवस्थाओं के अनुरूप होती हैं। उदाहरण के लिए किषोर कुछ ऐसे अपशब्दों या कथनों का प्रयोग

अपनी भाषा में करते हैं, वयस्क होने पर वे जिनका प्रयोग करना बंद कर देते हैं। आपने यह भी ध्यान दिया होगा कि बड़े लोग कुछ ऐसे शब्द रूपों का प्रयोग केवल तभी करते हैं जब वे बूढ़े हो जाते हैं।

भिन्न–भिन्न पीढ़ियों की भाषा में यह अंतर भाषा में हो रहे परिवर्तन को दर्षाने के लिए भी उपयोगी होता है। विलियम लेबोव (1972) ने वास्तविक समय (real time) और अवास्तविक समय (apparent time) में भाषा के परिवर्तन की चर्चा ही है। वास्तविक समय में भाषायी परिवर्तनों का स्वरूप देषांतरीय होता है और इसलिए शोधकर्त्ता के लिए इसे हमेषा कर पाना संभव नहीं होता। इसका विकल्प है बड़े लोगों की भाषा की तुलना युवा लोगों की भाषा से की जाए। जहाँ बड़े लोगों की भाषा पुरातन प्रतिमान निर्मित करती हैं, वहीं युवा लोगों की भाषा में अपेक्षाकृत नए प्रतिमान दृष्टिगत होते हैं और उनके बीच अंतर दर्षाते हैं कि भाषा में परिवर्तन जारी हैं। यह भाषा–परिवर्तन सिर्फ (पूर्णतः) भाषायी कारणों से  हो सकता है लेकिन यह अक्सर विभिन्न सामाजिक–मनोवैज्ञानिक दबावों का परिणाम होता है जो अलग–अलग पीढ़ियों में चलता है और उनकी भाषा में प्रतिबिम्बित होता है।

**बोध प्रष्न 5**

**टिप्पणीः** (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) अपनी भाषा की महिलाओं और पुरुषों के बीच पाए जाने वाले पाँच अंतर लिखिए।

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

2) वास्तविक समय और अवास्तविक समय के बीच अंतर का वर्णन कीजिए।

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

## 2.8 प्रयुक्ति के कारण भिन्नता

अभी तक हमने वक्ता की सामाजिक–वैयक्तिक विषेषताओं (जैसे वह किस क्षेत्र का है, उसके सामाजिक वर्ग, जाति, लिंग (जेंडर), आयु, इत्यादि) के कारण भाषा में होने वाले भिन्नता पर चर्चा की। अब हम वक्ताओं के अलग–अलग सामाजिक स्थितियों/संदर्भों में उसकी बोलचाल की विभिन्नताएँ को देखेंगे। **प्रयोग** के कारण होने वाली यह भिन्नता "प्रयुक्ति" कहलाती है।

अलग–अलग स्थितियों में वक्ता द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली भाषा पर नियंत्रण रखने के लिए कई कारक उत्तरदायी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि हम अपने अध्यापक के साथ पाठ्यक्रम के संबंध में कोई बात करते हैं तो वह उस भाषा से बिल्कुल भिन्न होगी जिसका प्रयोग घर में अपने परिवार के सदस्यों के साथ किया जाता है। दूसरे शब्दों में, भाषा इस पर आधारित होगी कि संप्रेषण क्रिया के **प्रतिभागियों** के बीच क्या संबंध है। परिवार के साथ व्यक्ति शायद ज्यादा औपचारिक न हो और यहाँ तक कि घनिष्ठ भी हो, लेकिन विद्यालयों में अपने वरिष्ठ विद्यार्थियों के साथ हम कुछ औपचारिक रूप से बात करेंगे और अध्यापक के साथ तो हम बहुत ही औपचारिक होंगे।

**उदाहरण**

अपने भाई के साथः जल्दी करो, हमें देर हो रही है।

मित्र के साथः समय हो गया है हमें चलना चाहिए नहीं तो हमें कक्षा के लिए देर हो जाएगी।

अध्यापक के साथः सर तीन बज गए हैं, और भौतिकी के कक्षा के बाहर प्रतीक्षा कर रहे हैं। क्या हमें अपनी कक्षा समाप्त नहीं कर देनी चाहिए?

कुछ भाषाओं में अन्य भाषाओं की तुलना में भिन्नता का प्रकार औपचारिक रूप से अपेक्षाकृत अधिक कोडीकृत होता है। जापानी भाषा में, व्यक्ति जिस व्यक्ति से बात करता है उसके लिए विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया जाता है और वह किस व्यक्ति के लिए किस शब्द का प्रयोग करेगा, यह व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह उस व्यक्ति के लिए कितना आदर या श्रद्धा भाव रखता है और वह उसी के अनुसार उस व्यक्ति के लिए शब्द का प्रयोग करेगा। फ्रेंच भाषा में दो सर्वनाम (Tu और Vous) हैं। "TU" का प्रयोग घनिष्ठ मित्रों और परिवार के लिए निष्चित है। "हालाँकि अंग्रेज़ी में ऐसे अलग–अलग सर्वनाम नहीं हैं, लेकिन फिर भी उसमें व्यक्ति जिस दूसरे व्यक्ति को संबोधित कर रहा है उसके साथ व्यक्ति के संबंध को व्यक्त करने वाले विकल्प उपलब्ध हैं।

औपचारिकता में भिन्नताएँ लिखित भाषा में दृष्टिगत होती हैं।

**उदाहरण**

Just a short note to tell you that we reached home in one piece (less formal)

This is inform you that we've reached home safely (more formal).

औपचारिकता और अनौपचारिकता का स्तर बातचीत की **विषयवस्तु** के परिवर्तन से भी बदल जाता है। क्वांटम भौतिकी या अंतरराष्ट्रीय अर्थषास्त्र जैसे विषयों पर बोलते समय हम ऐसे भाषायी–प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं जो पाक कला और राजनीतिषास्त्र जैसे विषयों पर चर्चा करने में प्रयुक्त भाषा प्रकारों से ज्यादा औपचारिक होते हैं। इसके अलावा, प्रत्येक विषय विषेष व अपनी–अपनी विषिष्ट कृत्रिम भाषा के तकनीकी शब्द होते हैं। ये भेद न केवल विभिन्न शब्दगत स्तर पर होते हैं, बल्कि वाक्य संरचना और अर्थविज्ञान के स्तर पर भी होते हैं। उदाहरण के लिए विधि (कानून) की भाषा, मेडिसिन की भाषा से नितांत भिन्न होती है और मेडिसिन की भाषा इंजीनियरिंग की भाषा से बिल्कुल अलग होती है।

**उदाहरण**

राज्य कमजोर वर्गों के लोगों, विषेषकर अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक और आर्थिक हितों का संवर्धन विषेष रूप से करेगा।

बैच पद्धति मॉडल में संवृत्त तंत्र में जैव घटक और सहायक पोषण माध्यम मिलाए जाते हैं।

तंतु बैक्टीरिया में बहुत कम जीन्स होते हैं।

लिखित और उच्चरित भाषा में भी तदनुसार भिन्नताएँ होती हैं। लिखित अंग्रेज़ी उच्चरित (बोली जाने वाली) अंग्रेज़ी की अपेक्षा अधिक औपचारिक होती है, और यह बात अन्य भाषाओं में भी देखी जाती है। एक विषेष उदाहरण के लिए तमिल और बंगाली में

साहित्यिक भाषा (ग्रदिका) और व्यावहारिक भाषा (व्यवहारिक) के बीच स्पष्ट और पर्याप्त अंतर है। अतः अंतर संप्रेषण के तरीके के कारण भी हो सकता है।

उपर्युक्त चर्चा से हमने तीन सामान्य प्रकारों के आयामों के अनुसार भाषा में भेद किया। ये तीन आयाम हैंः प्रतिभागियों के बीच संबंध, बातचीत की विषयवस्तु और संप्रेषण का तरीका अर्थात वाक् या लिखित। माइकल हैलिडे (1978) ने आयाम के इन तीन सामान्य प्रकारों को **क्षेत्र, तरीका और उपमेय** कहा। क्षेत्र का संबंध **प्रयोजन** और संप्रेषण की विषयवस्तु से है, **तरीके** से अभिप्राय उन साधनों से है जिनके द्वारा संप्रेषण होता है अर्थात् वाक् या लिखित भाषा और **उपमेय** प्रतिभागियों के बीच संबंधों पर आधारित होता है।

व्यापक रूप से प्रयुक्त होने वाला एक अन्य प्रतिमान डेल हाइम्स (1972) द्वारा प्रस्तावित किया गया जिसमें "बोली" के चर के अलावा कम से कम 13 अलग–अलग चर वक्ता द्वारा चुनी गई भाषायी **मदों** को निर्धारित करते हैं। निस्संदेह, यह संरचना प्रयुक्ति भिन्नताओं की सभी जटिलताओं को प्रतिबिम्बित करती है। यह प्रत्येक प्रतिमान एक ऐसा ढाँचा प्रदान करता है जिसमें वाक् समानताओं और भिन्नताओं से संबंधित किसी भी अध्ययन में इन्हें देखा जा सकता है।

---

**बोध प्रष्न 6**

**टिप्पणीः** (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) समाचारपत्र के सामान्य और व्यापारिक (बिजनेस) भाग को देखिए और वाक्य संरचना में भिन्नताएँ ज्ञात कीजिए।

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

## 2.9 सारांष

इस इकाई में हमने भाषा और समाज के बीच घनिष्ठ अंतःसंबंध बताने का प्रयास किया है। व्यक्ति की भाषा में क्षेत्रीय पृथक्करण, सामाजिक–आर्थिक स्तर, जाति और नृजातीय पृष्ठभूमि में भिन्नताओं के कारण अंतर हो सकते हैं।

व्यक्तिगत विषेषताएँ जैसे स्त्री/पुरुष, व्यक्ति की आयु भी भाषायी भिन्नता के लिए उत्तरदायी कारक होते हैं।

अंततः, भाषा व्यक्ति जिस स्थिति में है उस स्थिति के कारण भी बदल सकती है जिसमें ये सभी कारक शामिल होंगे कि वह किससे बात करता है, बातचीत का विषय और संप्रेषण का तरीका क्या है।

## 2.10 बोध प्रष्नों के उत्तर

**बोध प्रष्न 1**

1) प्रष्न का उत्तर देने से पहले भाग 2.0 और 2.2 देखें।

**बोध प्रष्न 2**

1) अपेक्षाकृत निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के लोगों की भाषा में काफी भिन्नता दिखाई देने की संभावना रहती है क्योंकि यह समूह ऊर्ध्वगामी गतिषीलता की इच्छा रखता है और सफलता का एक सूचक है। समाज के उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के लोगों की षिक्षा तक बेहतर पहुँच का कारण उन्हें प्रतिष्ठाग्राही भाषा का उपलब्ध होना है।

2) भाग 2.3 पढ़ें।

**बोध प्रष्न 4**

1) भाग 2.6 ध्यानपूर्वक पढ़ें।

2) मानक भाषा एक बोली है जिसे भाषा समुदाय में एक प्रतिष्ठा हासिल है। वह क्षेत्रीय भिन्नताओं को लांघ कर संप्रेषण के एक समान साधन उपलब्ध करती है। यह वह भाषा है जो कोडीकृत होती है तो अर्थात् शब्दकोष और व्याकरण की पुस्तकें इसी भाषा के आधार पर लिखी जाती हैं। इसके अलावा इसी भाषा का प्रयोग जनसंचार माध्यमों और षिक्षा में होता है। बोली प्रतिष्ठा अर्जित करके

मानक क्यों बन जाती है इसका एक कारण है यह देष के राजनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र में बोली जाती है और उसी के कारण महत्व प्राप्त करती है।

**बोध प्रष्न 5**

2) आयु संबंधी भाग पढ़ें।

## 2.11 पठनीय सामग्री

मेस्थ्री, राजेन्द. आदि (2000), इन्ट्रोड्यूसिंग सोषियोलिंग्यूस्टि्क्स (द्वितीय संस्करण), एडिनबर्गः एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी प्रेस